ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

डुमरांव नगर में जनसंख्या संघटन: एक भौगोलिक अध्यन

1. चन्द्र भूषण
शोध छात्र, भूगोल विभाग
वीर कुँवर सिंह विश्व विद्यालय, बिहार
2. डा. ललित सागर
भूगोल विभाग
एच डी जैन कालेज-आरा, बिहार

जनसंख्या संघटन जनसंख्या के उस पक्ष को प्रदर्शित करता है जिसको मापा जा सकता है। जनसंख्या के मात्रात्मक पहलू जैसे आयु-संरचना, जनसंख्या-वितरण, जन-घनत्व, लिंगानुपात, कार्यशील और आश्रित जनसंख्या तथा साक्षरता आदि तत्त्वों का वर्गीकरण और अध्ययन जनसंख्या संघटन कहलाता है।[1] दूसरे शब्दों में जनसंख्या की भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विशेषताओं को जनसंख्या का संघटन कहा जाता है। आयु, लिंग, निवास स्थान, भाषा, धर्म, मानव प्रजातिया, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा और व्यावसायिक संरचना प्रमुख सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं हैं।

जनसंख्या संरचना के जनांकिकीय तत्त्वों में आयु एवं लिंग का विशेष महत्त्व है। भविष्य में जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या में आयु एवं लिंग संरचना पर निर्भर करती है। परन्तु जनांकिकी में आयु एवं लिंग का विशेष अध्ययन किया जाता है।[2]

जनसंख्या संघटन का महत्त्व

जनसंख्या संघटन के अध्ययन का जनांकिकी में अत्यधिक महत्त्व है। यह निम्नांकित विवरणों से स्पष्ट हो जाता है-

1.जनसंख्या संरचना के आंकड़ों से किसी जनसंख्या के सामाजिक-आर्थिक पहलू का अध्ययन करने के लिए सामग्री मिल जाती है।

2.जनसंख्या संघटन के आंकड़ों से मानव संसाधनों की खोज हो जाती है, जिससे विकास की योजनाएँ बनाने में सहायता मिलती है।

3.जनसंख्या संघटन का अध्ययन वृहत रूप में किया जाता है। इस कारण दो क्षेत्रों की जनसंख्या की तुलना संभव हो जाती है।

4.जब सिविल रजिस्ट्रेशन से जन्म और मृत्यु के आंकड़े उपलब्ध नहीं हो पाते हैं तो जनसंख्या से प्राप्त आयु एवं लिंग के आंकड़ों से उन्हें प्राप्त कर लियाजाता है।

जनसंख्या की आयु-संरचना

जनसंख्या की शक्ति और सामर्थ्य के अध्ययन में सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी आयु संरचना है। इसके अंतर्गत विश्व के देशों की जनसंख्या में विभिन्न आयु वर्गों के मनुष्यों की संख्या का % ज्ञात कर तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसको तीन आयु समूहों जैसे 0-15 वर्ष तक तरूण 15-59 वर्ष तक वयस्क और 60 वर्ष अथवा इससे अधिक आयु सीमा को वृद्धि कहा जाता है।

इस आधार पर सुंदरवर्ग ने विभिन्न जनसंख्या की प्रवृत्तियों की ओर संकेत किया है :

1.प्रगतिशील : प्रगतिशील जनसंख्या के अंतर्गत 40 % जवान तथा 10 % बुढ़े पाये जाते हैं।

2.स्थिर : यदि जनसंख्या में बच्चे, जवान या बुढ़ों का % क्रमशः 27, 50, 23 हो तो वह स्थिर जनसंख्या कहलाएगी।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

3.अधोगामी : यदि जनसंख्या की आयु संरचना में 20 % बच्चे, 50 % जवान तथा 30 % बूढ़े पाये जाये तो वह अधोगामी जनसंख्या कहलाती है।

4.अनुक्रमिक : इस जनसंख्या में उक्त अनुपात क्रमशः 25 %, 60 % तथा 15 % पाया जाता है। सुंदरवर्ग के उपर्युक्त वर्गीकरण के आधार पर विकासशील देशों की जनसंख्या अति प्रगतिशील मानी जाती है, क्योंकि वहां की संख्या में बच्चों की संख्या 4 गुनी पायी जाती है, जबकि विकसित देशों में बूढ़ों की संख्या कुछ अधिक ही होती है, जिसका प्रमुख कारण वहां जन्म दर व मृत्यु दर का नीचे होना है।

डुमराँव नगर में जनसंख्या संघटन

डुमराँव नगर बिहार राज्य के दक्षिण – पश्चिम किनारे पर स्थित बक्सर जिला के मध्यवर्ती भाग में बसा हैं. यह $25^0$55′ उत्तरी अक्षांश तथा $84^0$15′ पूर्वी देशांतर पर स्थित हैं. इसके उत्तर में पुराना भोजपुर, नया भोजपुर,दक्षिण में मुगांव,कोरंसराय पूरब में नंदन, छतनवार तथा पश्चिम में नेनुआ एवम बदकी बसौली गाँव स्थित है. समुंद्र तट से इस नगर की ऊचाई 61 मीटर है. काव नदी नगर की पूर्वी सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है. नगर की आक्री ति लग्भग चत्उर्भुजाकार है. सम्पूर्ण नगर 26 वार्डो में विभक्त है. राश्ट्रीय राजमार्ग 84 इसकी उत्तरी सीमा बनाते हुए गुजरता है. जबकिराजकिय राजमार्ग 79 इस के मध्य में उत्तरी सीमवर्ती भाग से हो कर गुजरता हैं. सम्पूर्ण नगर का कश्त्रफल 2367 वर्ग कि. मी. है. नगर उत्तर से दक्षिण 5.38 कि. मी. की लम्बाई में तथा पक्षिमसे पूरब 4.4 कि. मी. की चौडाई में फैला हुआ हैं 2011 की जनगणनाके अनुसार नगर की जंसंख्या 53618 है।

उद्देश्य: प्रस्तुत अध्यन के उद्देश्य निम्न है

- अध्यन क्षेत्र में जनसंख्या संघटन का कालिक एवं स्थानिक प्रतिरूप
- जनसंख्या संघटन के तत्वो का विश्लेषण
- जनसंख्या संघटन तत्वो को विषमताओ को कम करने के लिये व्यहरिक य्प्जना प्रस्तूत करना

जनसंख्या की आयु संरचना का महत्त्व

जनसंख्या विश्लेषण में आयु संरचना का अध्ययन अत्यधिक उपयोगी होता है। जैसा कि निम्नलिखित विवरण से स्पष्ट होता है।

1.आश्रित अनुपात का ज्ञान- आयु संरचना के अध्ययन से किसी जनसंख्या में आश्रितों के अनुपात को ज्ञात किया जा सकता है। स्थूल रूप से 0-14 वर्ष तक के आयु वर्ग के बच्चे एवं 60 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धि को आश्रित जनसंख्या में सम्मिलित किया जाता है। जिस समाज में आश्रितों का अनुपात जितना अधिक होगा, उस देश में आय का उतना ही अधिक भाग प्रत्यक्ष भौतिक विनियोग से वंचित हो जाएगा, क्योंकि आय का उतना ही बड़ा भाग उपभोग में व्यय हो जायेगा। यह अनुपात जितना कम होगा, उतना ही आर्थिक विकास एवं रहन-सहन का स्तर ऊँचा होने की संभावना रहती है।

2.श्रमशक्ति का ज्ञान- जनसंख्या का वह भाग जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक व्ययों में सहयोग देता है, श्रमशक्ति या कार्यशील जनसंख्या कहलाता है। साधरणतया 15 वर्ष से 60 वर्ष की आयु वर्ग वाले लोगों को श्रमशक्ति में सम्मिलित किया जाता है। जनसंख्या में जितनी अधिक श्रम शक्ति का अनुपात होगा उत्पादन एवं आर्थिक विकास उतना ही अधिक तीव्र होगा।

3.श्रम शक्ति की औसत आयु का ज्ञान- किसी भी प्रदेश की जनसंख्या संरचना के अध्ययन का महत्त्व इस दृष्टिकोण से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे श्रम शक्ति की औसत आयु

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जिस प्रदेश को श्रम शक्ति में जितने अधिक युवा श्रमिक होंगे वह देश उतना परिवर्तनें को आत्मसात करने तथा परिश्रम की दक्षता को निर्धारित कर सकता है।

4.उपभोग के स्वरूप का निर्धरण : आयु संरचना के विश्लेषण का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि इसकी सहायता से समाज के उपभोग के स्वरूप की जानकारी उपलब्ध की जा सकती है। उदाहरण के लिए, जिस समाज में युवकों की संख्या अधिक होगी वहां वस्त्री, शिक्षा, पफैशन, कार, विवाह, मोबाइल पफोन एवं मनोरंजन के साधनों पर अधिक व्यय होगा। इसके विपरीत जिस समाज में शिशुओं की संख्या अधिक होगी उस समाज में दूध, बेबी पफूड, रेडिमेंड वस्त्री, दवाइयों आदि पर अधिक व्यय किया जाएगा।

5.मृत्यु-दर का निर्धारण: आयु-संरचना मृत्यु दर को भी प्रभावित करती है क्योंकि ऐसे समाज में जहां युवकों की संख्या अधिक होगी वहां मृत्यु दर कम होती है। जबकि ऐसे समाज में जहां बच्चों, बुढ़ों तथा विधवाओं की संख्या अधिक होगी वहां मृत्यु दर भी अधिक होगी।

6.वैचारिक महत्त्व : विचारधरा को दृष्टि से भी जनसंख्या की आयु संरचना का महत्त्व है। अर्थात् आयु संरचना विचारधारा को प्रभावित करती है। जिस प्रदेश में युवकों की अधिकता होगी, वहां की विचारधरा प्रगतिशील होगी। साथ ही उस समाज में होनेवाले सामाजिक परिवर्तनों को स्वीकार करने की क्षमता अधिक होगी तथा सामाजिक परिवर्तनें को आदर की दृष्टि से देखा जाएगा। इसके विपरीत जिस समाज में वृद्धिों की संख्या अधिक होगी, वह समाज रूढ़िवादी एवं परंपरावादी होगा। ऐसे समाज में परिवर्तनें को स्वीकार नहीं किया जाएगा।

7.अन्य महत्त्व - मानव शक्ति कितनी है, अतः राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से उपयोग संभव होता है। इसी के आधार पर विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का प्रस्ताव पारित किया जाता है। सरकारी कार्यालयों, सुरक्षा मंत्रालयों, योजना समितियों एवं रोजगार देनेवाली संस्थाओं को इस प्रकार की जानकारी आवश्यक है।

आयु संरचना को प्रभावित करनेवाले कारक

जनसंख्या की आयु संरचना को प्रभावित करनेवाले तीन महत्त्वपूर्ण कारक निर्धारित है : 1. जन्म दर व प्रजनन दर, 2. मृत्यु दर 3. प्रवास

ये तीनों निर्धारक कारक एक दूसरे पर निर्भर करते हैं और इनमें से किसी एक में परिवर्तन से अन्य दोनों कारक प्रभावित हो जाते हैं। इन परिवर्तनशील कारकों के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक दशाएं भी आयु संरचना को प्रभावित करती है।

अब हम आयु संरचना को प्रभावित करनेवाले घटकों का अध्ययन करेंगे।

1.जन्म दरः जन्म दर विभिन्न आयु वर्गों में जनसंख्या के अनुपात को निश्चित करती है।

2.मृत्यु दर : जनसंख्या की आयु संरचना पर मृत्यु दर का भी प्रभाव पड़ता है।

3.प्रवास- गतिशीलता प्रवास या देशांतरण का प्रत्यक्ष प्रभाव आयु संरचना पर पड़ता है।

अध्ययन क्षेत्र में आयु संरचना को प्रभावित करनेवाले घटकों (जन्म-दर, मृत्यु दर एवं प्रवास) के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है :

1.यदि पहले की अपेक्षा जन्म दर में कमी हो तो उसके साथ-साथ बच्चों का अनुपात भी पहले की अपेक्षा कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में आयु पिरामिड का धरातल ऊपरी भाग से अधिक हो जाता है। जन्म-दर की अचानक वृद्धि से जनसंख्या में बच्चों का अनुपात बढ़ जाता है और पिरामिड की आकृति विपरीत हो जाती है।

2.किसी भी आयु पर मृत्यु दर में अचानक कमी आने से उस आयु से अधिक वाले वर्ग में लोगों की संख्या बढ़ती है। मृत्यु-दर में अधिकता होने के कारण ही लोग अधिक आयु प्राप्त कर पाते हैं।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

3.पुनरूत्थान करने योग्य आयु तक पहुंचनेवाले व्यक्तियों की संख्या से आयु गठन प्रभावित होता है। यदि प्रारंभिक वर्षों में मृत्यु दर अधिक हो तो कम ही लोग पुनरूत्थान करने योग्य आयु तक पहुंच पायेंगे अर्थात् अपरोक्ष रूप से आयु पिरामिड का धरातल अधिक होता जाएगा।

4.प्रवास का प्रभाव मुख्यतः युवावस्था के व्यक्तियों की संख्या पर पड़ता है। यदि अध्ययन क्षेत्र के बहारी वार्डों में बाहर से आकर लोग बसते हैं तो आयु पिरामिड के बीच का हिस्सा बढ़ जाता है और यदि आन्तरिक वार्डों से बाहर जाकर बसते हैं तो आयु पिरामीड के बीच का हिस्सा पतला हो जाता है।[4]

अध्ययन क्षेत्र के जनसंख्या की आयु संरचना में उपर्युक्त प्रमुख कारकों के अलावा सामाजिक-आर्थिक स्तर, प्राकृतिक विपत्ति तथा जनसंख्या नीति का प्रभाव भी पड़ता है। में अधिकांशतः युवा आयु वर्ग अधिक प्रभावित होता है तथा इसमें प्रमुखतः पुरूष वर्ग का अधिक प्रभावित होने से आयु संरचना पर प्रभाव पड़ता है। इसी भांति प्राकृतिक विपत्ति के फलस्वरूप जनसंख्या की आयु संरचना प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त देश की जनसंख्या नीति से भी यह अनुपात प्रभावित होता है।

तालिका- 1

डुमराँव नगर : 10 से 16 आयु वर्ष की संख्या

क्रं.सं.	वार्ड संख्या	जनसंख्या (0-16 वर्ष)	कुल जनसंख्या का %	क्रं.सं.	वार्ड संख्या	जनसंख्या (0-16 वर्ष)	कुल जनसंख्या का %
1	1	707	17.67	7	7	670	19.47
2	2	577	15.59	8	8	411	15.33
3	3	569	17.90	9	9	665	17.57
4	4	550	17.72	10	10	1434	18.17
5	5	1019	20.74	11	11	757	16.69
6	6	881	19.25	डुमराँव नगर		8440	17.99

स्रोत : पी.सी.ए. बिहार, 2001

डुमराँव नगर में 10 से 16 आयु वर्ष के लोगों की संख्या से ज्ञात होता है कि 2001 की तुलना में 2011 में शिशु जनसंख्या में 2.47%की कमी आयी है। क्योंकि 10-16 आयु वर्ग के लोगों की संख्या 2001 में 17.99%थी जो 2011 में घटकर 15.22%हो गई है। यह जन्म दर की गिरावट को इंगित करता है। अगर भविष्य में भी यह गिरावट जारी रही तो अध्ययन क्षेत्र की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार होगा।

जनसंख्या घनत्व

किसी प्रदेश या क्षेत्र में निवास करनेवाली कुल जनसंख्या में कुल क्षेत्रफल से भाग देने पर उस स्थान का घनत्व निकलता है। जनांकिकी में 5 प्रकार के घनत्व (अंकगणितीय, कार्यिक, कृषि, आर्थिक एवं पोषण घनत्व) का अध्ययन किया जाता है। लेकिन अध्ययन क्षेत्र एक नगर होने के कारण सिर्फ अंकगणितीय घनत्व की आवश्यकता है।

अंकगणितीय घनत्व = अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या÷अध्ययन क्षेत्र का क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में

=53618÷15=3575 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.

इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में 3575 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. निवास करते हैं। इस घनत्व में भी अन्तर पाया जाता है। पुराने आवासीय क्षेत्र एवं मध्यवर्ती वार्डों में जनसंख्या

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

घनत्व अधिक है जबकि नये आवासीय क्षेत्र एवं किनारे वाले वार्डो में जनसंख्या घनत्व कम है। 2001 में 11 वार्डों की तुलना में 2011 में 26 वार्ड होने एवं वार्डों के परिसीमन बदलाव के कारण पिछले दशक से वर्तमान के घनत्व की समीक्षा नहीं की जा सकती है। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि 2001 में अध्ययन क्षेत्र का घनत्व 3054 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था। एक दशक में 521 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. की वृद्धि हुई है जो पिछले घनत्व का 17.05% है। तालिका 4.4 में अध्ययन क्षेत्र के घनत्व का विवरण मिल जाता है।[6]

तालिका -2

डुमराँव नगर : जनसंख्या घनत्व (2011)

क्रं.सं	वार्ड संख्या	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में)	जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व	क्रं.सं	वार्ड संख्या	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी. में)	जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व
1.	1	1.10	2289	2081	15.	15	0.25	1136	4544
2.	2	0.85	1765	2076	16.	16	0.32	2578	8056
3.	3	0.42	1801	4288	17.	17	0.20	1409	7045
4.	4	1.61	4429	2751	18.	18	0.17	977	5747
5.	5	0.67	2144	3200	19.	19	0.64	2143	3348
6.	6	0.62	2783	4489	20.	20	0.28	1461	5218
7.	7	1.03	2720	2691	21.	21	0.22	1543	7014
8.	8	0.84	1778	2117	22.	22	0.28	2122	7579
9.	9	0.23	1732	7530	23.	23	0.92	1791	1947
10.	10	0.25	1923	7692	24.	24	0.25	1691	6794
11.	11	0.18	1999	11105	25.	25	0.76	1778	2339
12.	12	0.36	2638	7327	26.	26	1.73	1366	3574
13.	13	0.39	2911	7464			15.00	53618	3574
14.	14	0.36	2711	4531					

स्रोत : नगरपालिका कार्यालय डुमराँव

तालिका 2 के आधार पर डुमरावं नगर के घनत्व को तीन भागों में बांटकर अध्ययन किया जा सकता है-

(1) अधिक जनसंख्या घनत्ववाले वार्ड- इसमें ऐसे वार्ड को सम्मिलित किया जा सकता है जिसका औसत घनत्व 8000 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से अधिक है। नगर के इस अधिक जनसंख्या वाले वार्डों में वार्ड नं.11 एवं दूसरे नम्बर पर वार्ड नं.-16 का स्थान आता है। वार्ड नं.-11 का जन घनत्व 11105 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है जो नगर का सर्वाधिक जन घनत्व वाला वार्ड है। दूसरे नम्बर पर वार्ड नं.-16 का स्थान आता है जहां 8056 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. निवास करते है। इन दोनों ही वार्डों में जन घनत्व अधिक होने का मुख्य कारण मुस्लिम समुदाय वाले परिवार की अधिकता है। इसके अलावा इन वार्डों में साक्षरता का स्तर भी निम्न है। अधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण इस वार्ड में घनत्व अधिक पाया जाता है।

(2) मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले वार्ड- इसमें ऐसे वार्ड को सम्मिलित किया जा सकता है जहां जनसंख्या घनत्व 4000 से 8000 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। इसमें नगर के 14 वार्ड सम्मिलित किये जाते हैं। इसमें वार्ड नं.-10 (7692), वार्ड नं.- 22 (7573), वार्ड नं.- 14 (7531), वार्ड नं.-9 (7530), वार्ड नं.-13 (7464), वार्ड नं.-12 (7327), वार्ड नं.- 17 (7045), वार्ड नं.-21 (7014), वार्ड नं.-24 (6764), वार्ड नं.-18 (5747), वार्ड नं.-20 (5218), वार्ड नं.-15(4544) वार्ड नं.6

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

(4489) तथा वार्ड नं.-3 (4288) का स्थान आता है। इन वार्डों में भी जन घनत्व अधिक होने का मुख्य कारण नगर के आंतरिक भाग में होना है।

(3) कम जनसंख्या घनत्व वाले वार्ड- इस वर्ग में ऐसे वार्ड को सम्मिलित किया जाता है जिसमें जनसंख्या घनत्व 4000 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से कम हो। इस वर्ग में भी नगर के एक दर्जन वार्ड सम्मिलित किये जाते हैं। इसमें क्रमशः वार्ड नं.-19, वार्ड नं.-5 (3200), वार्ड नं.-4 (2751), वार्ड नं.-7 (2691), वार्ड नं.- 25 (2330), वार्ड नं.- 8 (2117), वार्ड नं.-1(2081), वार्ड नं.2(2076), वार्ड नं.-23(1947) तथा वार्ड नं.-26 (730) का स्थान आता है।

लिंगानुपात-

जनसंख्या में लिंगानुपात का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी प्रदेश की जनसंख्या में लिंगानुपात को देखकर ही वहां की सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति का एक निश्चित सीमा तक अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरणार्थ यदि किसी क्षेत्र में पुरूषों की संख्या स्त्रियों से कम है तो स्त्रियों की अधिकता के कारण जन्म दर और जनसंख्या वृद्धिअधिक होने की संभावना रहती है। परन्तु स्त्रियों की तुलना में पुरूषों की संख्या अधिक है तो ऐसी स्थिति में अनेक सामाजिक बुराइयों को बढ़ावा मिलता है। जैसे वेश्यावृति व यौन अनैतिकता आदि। स्त्री-पुरूष अनुपात की भिन्नता के कारण ही देश के विभिन्न भागों में भिन्न-भिनन वैवाहिक व पारिवारिक प्रथाएं देखने को मिलती है। उदाहरण के रूप में देखने को मिलता है कि भारत के जिन राज्यों या क्षेत्रों में स्त्रियों की बहुलता है वहां बहुपत्नी विवाह व बहुपत्नी परिवार पाये जाते हैं। इसके विपरीत जहां स्त्रियों की तुलना में पुरूषों का बाहुल्य है, वहां बहुपति विवाह व बहुपति परिवार पाये जाते हैं। इसी तरह कहीं-कहीं पर स्त्री पुरूष संख्या के आधार पर ही मातृ और पितृ सत्तात्मक परिवार भी पाये जाते हैं।

यदि किसी प्रदेश में स्त्रियों से उत्पादन कार्य में सहयोग लिया जाता है, तो वहां आर्थिक विकास और प्रति व्यक्ति आय पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत यदि स्त्रियों को घर से बाहर पुरूष के समकक्ष उत्पादन कार्यों में सहयेग देने का अवसर नहीं मिलता है तो प्रदेश की आर्थिर्क-व्यवस्था और उसके विकास पर इसका बुरा प्रभाव होता है। लिंगानुपात का किसी प्रदेश की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से घनिष्ठ संबंध रहता है। अध्ययन नगर में स्त्रियों का उत्पादन कार्य में सहयोग नहीं के बराबर है। यहां ब्यूटी पार्लर, श्रृंगार एवं चूड़ी की दुकानों के अलावा दूसरे कार्य में महिला की सहभागिता नहीं मिलती है।

किसी जनसंख्या के संख्यात्मक लिंग संघटन मापन को लिंग अनुपात कहा जाता है। विभिन्न देशों में इसका आंकलन भिन्न-भिन्न तरीकों से किया जाता है। भारत में लिंग अनुपात की परिकल्पना प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या के रूप में की जाती है

=>महिलाओं की संख्या÷ 1000 पुरुष

प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक लिंग अनुपात में भी भेद किया जाता है। प्राथमिक लिंग अनुपात का अभिप्राय गर्भधरण काल के लिंग अनुपात से, द्वितीयक लिंग अनुपात का अभिप्राय प्रसव काल के लिंग अनुपात से, तथा तृतीयक लिंग अनुपात का अभिप्राय जनगणना के समय के लिंग अनुपात से होता है।

प्राथमिक लिंग अनुपात

आनुवांशिक विज्ञान का मान्य सिद्धान्त है कि गर्भाधरण के समय सिद्धान्तः आशान्तित लिंग अनुपात नहीं होता है। द्वितीयक लिंग अनुपात, मृतजन्म में मृत्यु-दर की लिंग विभिन्नता तथा में गर्भ अवस्थाएं जिन के आंकड़े नहीं हैं इन सभी को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक लिंग अनुपात 124 से 135 पुरूष बच्चे प्रति 100 स्त्री के बीच माना गया है। बहुत समय तक यही विचार था कि प्राथमिक लिंग अनुपात कापफी उच्च होता है। पर हाल में उपलब्ध आंकड़े

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

इस बात की पुष्टि नहीं करते। आणविक लिंग विकास विधा से पूर्ण भ्रूण अवस्था में लिंग निर्धरण विश्वसनीय नहीं था। शायद इसी कारण प्रारम्भ की रिपोर्ट में प्राथमिक लिंग अनुपात को उच्च आंका गया है।

इस प्रकार प्राथमिक लिंग अनुपात 1:1 से भिन्न क्यों होता है, यह आनुवांशिक वैज्ञानिकों के लिए अनुमान का विषय रहा है। इसके बारे में कोरिया में कुछ संकेत मिला है। प्राथमिक लिंग अनुपात में विभिन्नता को माता-पिता के रक्त ग्रुप के संबंध में भी देखा गया है। तब पाया गया है कि जिन माताओं में ग्रुप का रक्त होता है उनमें नर शिशु गर्भधरण उच्च तथा ग्रुप वाली स्त्रियों में वह निम्न होता है। यह भी पाया गया है कि जिन पति-पत्नी का रक्त वर्ग असमान होता है उनमें नर बच्चे कम होते हैं।

द्वितीयक लिंग अनुपात

द्वितीयक लिंग अनुपात जिसे प्राकृतिक लिंग अनुपात भी कहा जाता है, जन्म काल का लिंग अनुपात है। यह लिंग अनुपात भी एक बराबर एक के अनुपात से भिन्न है। सभी स्तनधरी जीवों में, जिसमें मानव भी एक हैं, विश्व के सभी भागों में नर जन्म, मादा जन्म से अधिक होता है। यद्यपि समानता से भिन्नता कुछ अधिक नहीं है, तथापि जनसंख्या वृहत होने के कारण थोड़ी-थोड़ी भिन्नता भी विशाल हो जाती है।

जन्म काल के लिंग अनुपात को निर्धारित करनेवाले घटक अत्यंत उलझे होते हैं। इसलिए उन्हें पृथक् रूप से समझने के लिए उनका तथ्यात्मक विश्लेषण सहायक होगा। द्वितीयक लिंग अनुपात को प्रभावित करनेवाले आनुवंशिक घटकों का प्रभाव प्रभाव प्राथमिक लिंग अथवा तत्पश्चात् मर्त्यता में लिंग भिन्नता में दो प्रकार की विधाएं क्रियाशील हो सकती है। प्रथमतः लिंग अनुपात में विचलन का कारण अर्द्धसूत्राक वहन करती है।

इस प्रकार स्त्रियां जिन्हें कमजोर लिंग की संज्ञा दी जाती है, वे जैविक दृष्टि से अधिक सबल होती है, क्योंकि उनमें दो क्रोमोसोस होते हैं। यही कारण है कि बहुत सी बीमारियां स्त्रियां की अपेक्षा पुरूषों के लिए अधिक जानलेवा होती हैं। सम्भवतः प्रकृति ने स्त्रियों को जैविक दृष्टि से इसीलिए अधिक प्रबल बनाया है, ताकि मानव जाति में पुनरोत्पादन प्रक्रिया चलती रहे। इस प्रक्रिया में स्त्रियों का योगदान अधिक होता है।

कभी-कभी यह भी कहा जाता है कि द्वितीयक लिंग अनुपात 1:1 से भिन्न कारण से ही हो सकता है कि कुछ क्रोमोसोमियल मादा जाइगोट, नर क्रोमोसोम में विकसित हो जाते हैं। परंतु ऐसे लिंग परिवर्तन के कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

तृतीय लिंग अनुपात

जनगणना के समय जनसंख्या के लिंग अनुपात को तृतीयक लिंग अनुपात कहा जाता है। इसे भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न विधियों से अंकित किया जाता है। जनसंख्या भूगोलवेताओं की रूचि तृतीयक लिंग अनुपात के क्षेत्रीय विश्लेषण में अधिक होती है। तृतीयक लिंग अनुपात के तीन प्रमुख कारक हैं :

(क) जन्म के समय लिंग अनुपात,
(ख) मृत्यु के समय लिंग अनुपात,
(ग) प्रवासियों का लिंग अनुपात,

अध्ययन क्षेत्र में लिंगानुपात के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 1961 से 2001 तक लिंगानुपात में निरंतर गिरावट आयी है। अगले तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 2001 की तुलना में 2011 के लिंगानुपात में 5 प्रति हजार की वृद्धि हुई है। शिशु लिंगानुपात को देखने से प्रतीत होता है कि यह वृद्धि 41 प्रति हजार है।

जन्म-मृत्यु :

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

मुख्य रूप से किसी भी प्रदेश की जनसंख्या का आकार उसकी जन्म-दर और मृत्यु दर पर निर्भर करता है।8 यदि जन्म-दर, मृत्यु दर की अपेक्षा अधिक है तो जनसंख्या में वृद्धि होगी। इसके विपरीत यदि मृत्यु दर अधिक है जो जनसंख्या में कमी आयेगी। इसलिए जनांकिकी में जन्म दर एवं मृत्यु-दर का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। सन् 2010 से 2013 के बीच विश्व के कई देशों की जन्म दर का आकलन किया गया जो नीचे की तालिका में वर्णित है।

तालिका 3

विश्व के कुछ देशों की जनसंख्या, जनसंख्या में वृद्धि दर एवं जन्म दर (2013)

क्रं.सं.	देश	जनसंख्या (करोड़ में)	(% में)	जनसंख्या में वृद्धि जन्म दर (प्रति हजार)
1.	इंडोनेशिया	25.28	0.25	17.38
2.	जापान	12.69	0.13	8.23
3.	सं.रा.अमेरिका	32.00	-0.77	13.66
4.	रूस	14.46	0.03	12.11
5.	ब्राजील	20.03	0.80	14.97
6.	चीन	138.55	0.44	12.26
7.	बंगलादेश	15.65	1.60	22.07
8.	पाकिस्तान	18.21	1.49	23.76
9.	भारत	125.21	1.25	20.24
10.	नाइजीरिया	17.85	2.47	38.78

स्रोत : बघेल- भारत में जन्म दर प्रजननता, पृ.178

तालिका 3 के आँकड़े से स्पष्ट होता है कि भारत में जन्म दर एवं जनसंख्या वृद्धि कुछ कम आय वाले व मुस्लिम राष्ट्रों को छोड़कर अन्य विकसित, औद्योगिक एवं समाजवादी राष्ट्रों से बहुत अधिक है। भारत में जनगणना के अतिरिक्त समय-समय पर अनेक अनुमान और सर्वेक्षण तथा अध्ययन जनसंख्या के संबंध में होते आ रहे हैं। इनसे प्राप्त जनांकिकीय आँकड़ों में काफ़ी भिन्नता भी रही तथापि निर्विवाद रूप से यह स्वीकार किया जाता है कि भारत में जनसंख्या वृद्धि दर विकसित देशों से ज्यादा ही रहेगा।

साक्षरता-

किसी भी प्रदेश की जनसंख्या का गुणात्मक अध्ययन तथा समाज की प्रगति साक्षरता के स्तर पर निर्भर करती है। यदि प्रदेश में साक्षरता का स्तर ऊंचा होगा तो वहां का विकास यथाशीघ्र होता रहेगा। यह आम धरणा है कि जैसे-जैसे किसी प्रदेश में साक्षरता का % बढ़ेगा उस प्रदेश की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्थिति में भी सुधार होता जायेगा।भारतीय संविधान के अनुच्छेद -37 में नीति निर्देशक तत्वों के अंतर्गत किसी भी जनसंख्या के लिए शिक्षा को अनिवार्य बताया गया है। जनसंख्या को साक्षर बनाने के लिए 1988 ई. में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन की स्थापना की गई। इसी संकल्पना को आगे बढ़ाते हुए 2001 में देश में सर्व शिक्षा अभियान की शुरूआत की गई। साक्षरता को डुमराँव के मानचित्र पर एवं आरेख से दिखलाया गया है। रेखा आरेख की सहायता से साक्षरता का % स्पष्ट किया गया है।

2011 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 71.59%है जो सम्पूर्ण बक्सर जिला की साक्षरता दर 70.14%के लगभग बराबर है। यह सम्पूर्ण भारत की साक्षरता दर (74.04%) के करीब है तथा सम्पूर्ण बिहार की साक्षरता दर (61.80%) से अधिक है। अध्ययन क्षेत्र की पुरूष साक्षरता 78.64%तथा महिला साक्षरता 63.52%है। नगर में सर्वाधिक साक्षरता का % वार्ड नं.-2 (88.52%) में मिलता है। इसके बाद क्रमशः वार्ड नं.-21 (85.05%), वार्ड नं.-11 (81.82%), वार्ड नं.-16 (81.12%), वार्ड नं.-5

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

(78.22%), वार्ड नं.- 23 (77.92%), वार्ड नं.-5 (77.9%) वार्ड नं.-17 (77.7%), वार्ड नं.-15 (73.64%), वार्ड नं.-26 (73.65%), वार्ड नं.-18 (72.29%), वार्ड नं.-24 (72.12%), वार्ड नं.-12 (72.06%), वार्ड नं.-13 (71.50%), वार्ड नं.-22 (71.25%), वार्ड नं.-1 (70.79%), वार्ड नं.-20 (68.37%), वार्ड नं.-4 (67.53%), वार्ड नं.-19 (67.03%) वार्ड नं.-25 (67%), वार्ड नं.-6 (65.43%), वार्ड नं.-10 (62.8%), वार्ड नं.-7 (61.92%), वार्ड नं.-9 (61.63%) का स्थान आता है। सबसे कम साक्षरता वार्ड नं.-7 (55.35%) में है। इसका मुख्य कारण इस वार्ड में मुस्लिम समुदाय एवं पिछड़ा वर्ग के लोगों की प्रधनता है। इनलोगों की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ नहीं है। सबसे अधिक साक्षरता वार्ड नं.-2 में है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस वार्ड में आर्थिक रूप से सुदृढ़ एवं सम्पन्न लोग रहते है जो विभिन्न गांवों से आकर बसे है। यह मुख्य रूप से साक्षरता को मद्देनजर रखते हुए अपना आवास रेलवे स्टेशन के नजदीक बनाये है ताकि इनके बच्चे उच्च शिक्षा के लिए आरा, पटना, बनारस तक की दूरी तय कर सकें।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। यहां विभिन्न जाति, धर्म के लोग बसे हुए है। बिहार में अनेक जातियों को राज्य सरकार ने अनुसूचित जाति की श्रेणी में रखा है जिनमें हरिजन, पासवान, धोबी, धेसी, डोम, मेंहतर, हलखोर, नट, तुरी आदि प्रमुख है। इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति में मुख्य रूप से संथाल, उरांव, मुंडा, बंजारा, गोड़, लोहरा, बेढ़िया आदि है। ये जातियां आर्थिक विकास एवं शिक्षा में पिछड़ी हुई है। इनके विकास के लिए सरकार द्वारा अनेकों कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके अलावा नौकरी में इनको विशेष छूट दिया जा रहा है। तालिका 2.14 में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या को दर्शाया गया है।

अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा निवास करती है। केवल 5 % जनसंख्या नगरीय भागों में निवास करती है। बक्सर जिला में अनुसूचित जातियों की सर्वाधिक संख्या राजपुर प्रखण्ड (52864) में है। इसके बाद डुमराँव (5568) प्रखण्ड का स्थान आता है। 2011 की जनगणना के अनुसार डुमराँव नगर में अनुसूचित जाति की संख्या- 5063 एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 1125 है जो तालिका 4.23, 4.24 एवं 4.25 में इंगित होता है। दण्ड आरेख से भी इनकी स्थिति का अवलोकन स्पष्ट होता है।

तालिका - 4

डुमराँव नगर : अनुसूचित जाति की संख्या (1961-2011)

वर्ष	कुल जनसंख्या	पुरूष जनसंख्या	महिला जनसंख्या
1961	1591	817	774
1971	1598	845	753
1981	2562	1351	1211
1991	3267	1732	1535
2001	4185	2239	1946
2011	5063	2666	2397

स्रोत : नगरपालिका कार्यालय, डुमराँव

तालिका 4, के अवलोकन से ज्ञात हो जाता है कि अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या कितनी है। पिछले पांच दशकों में अनुसूचित जाति की संख्या में तीन गुना वृद्धि हुई है। वर्तमान में यह सम्पूर्ण जनसंख्या का 10.59%है। इसी प्रकार

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 16 July 2020

अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या जो पहले 1961 में मात्रा 21 थी। आज 1125 है जो सम्पूर्ण नगर की जनसंख्या का 2.09%है। इस प्रकार यह जनसंख्या औसत रूप में कम है क्योंकि यह जनसंख्या किसी प्रदेश के आर्थिक विकास में श्रमिक व्यवसाय के रूप में योगदान देती है।

जनसंख्या संघटन के तत्वो आयु संरचाना जंसंख्या वितरण घनत्व लिंगानुपात जन्म मृत्यु एवम साक्षर्ता अति महत्व्पूर्ण संघतन हैं.

जनसंख्या संघटन के तत्वो आयु संरचना, जनसंख्या वितरण,जन्म मृत्यु एवं साक्षरता महत्व्पूर्ण है।

संदर्भ:

1. सिंह, एस.के. (1988): रोहतास डिसट्रिक्ट: ए स्टडी इन इन्टिग्रेटेड रूरलडेवलाॅपमेंन्ट, पी-एच.डी. थीसिस (अन पब्लिस्ड), भागलपुर यूनिवर्सिटी,भागलपुर, पृष्ठ 74

2. सिंह, धर्मेंद्र (2013): स्पैशियल एनालिसिस ऑफ क्राइम्स इन द डिस्ट्रिक्टऑफ बक्सर, अन पब्लिस्ड पी-एच.डी. थीसिस, वीर कुंवर सिंह यूनिवर्सिटी, आरा, पृष्ठ 68

3. पंडित बाढू एवं कुमार अनिल (2001): बिहार का भूगोल, नेशनल बुकट्रस्ट ऑफ इंडिया।

4.अताउल्लाह मो. तथा मुसलीमुद्दीन (2002) बिहार का आधुनिक भूगोल,ब्रिलिएन्ट प्रकाशन, पटना, पृ. 37-38

5.अहमद इम्तयाज तथा अहसन कमर (2014): बिहार एक परिचय, नेशनल पब्लिकेशन, पटना, पृ. 206-214

6.राम, एल, एन. (2001): सिस्टेमिटिक ज्योग्राफीऑफ बिहार, पटना, यूनिवर्सिटी, पटना

7.राव, बी.पी. एवं सिंह आर.बी.पी. (1995) बिहार का भौगोलिक स्वरूप, वसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर

8.चांदना, आर.सी. (2005): ज्योग्राफीऑफ पापुलेशन, कल्यानी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 76-77

9.सिंह, आर. एल. (1961): मीनिंग, अबजेक्ट एण्ड स्कोप ऑफ सेटेलमेंन्टज्योग्राफी, नेशनल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, पृष्ठ संख्या 110

Copyright @ 2020 Authors